‘अलिखित ही रही सदा जीवन की लिखित कथा’

श्रद्धेय श्री हजारी बाबू

(1921-1985)

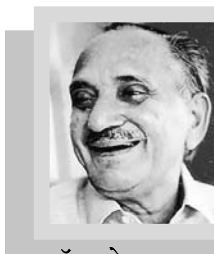

डॉ. मनोहर प्रभाकर

राजस्थान सरकार के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सेवानिवृत निदेशक डॉ. मनोहर प्रभाकर देश और प्रदेश के नामचीन साहित्यकार, कवि, व्यंग्यकार, अनुवादक, पत्रकार एवं जनसम्पर्क कर्मी के रूप में अपनी पहचान थी। हिंदी, अंग्रेजी और राजस्थानी भाषा में दर्ज़नों पुस्तकों के रचियता प्रभाकर ने साहित्य की सभी विधाओं में श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया। मनोहर प्रभाकर का साहित्य और साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष स्थान था। फीचर लेखन एवं गीतकार के रूप में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की। प्रभाकर जी ने पत्रकारिता के माध्यम से साहित्यिक जीवन में प्रवेश किया था। हिंदी साहित्य में उन्होंने कई विधाओं में अपनी लेखनी चलाई और अनुपम कृतियों का सृजन किया। उन्होंने पब्लिक रिलेशन्स सोसायटी ऑफ इंडिया जयपुर चैप्टर की स्थापना कर राजस्थान के जनसम्पर्क और मीडिया कर्मियों को एकसूत्र में बांधा।

रामधारी सिंह दिनकर

रामवृक्ष बेनीपुरी

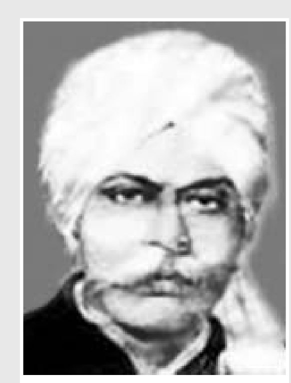

आचार्य किशोरी दास वाजपेयी

पाण्डेय बेचन शर्मा ‘उग्र’

हिन्दी के ओजस्वी राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का अधिकांश साहित्य, विशेषतः ‘उर्वशी’ महाकाव्य हजारी बाबू के कलकत्ता स्थित ‘जनवाणी’ प्रेस से ही छपा था। हिन्दी के मूर्धन्य वैयाकरण आचार्य किशोरी दास वाजपेयी, पांडेय बेचन शर्मा ‘उग्र’, रामवृक्ष बेनीपुरी जैसे साहित्य मनीषी हजारी बाबू के सुपरिचित आत्मीय रहे।

देश के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी एक कविता में जो उद्‌गार व्यक्त किए थे, वे राष्ट्रदूत के संस्थापक, परम विद्यानुरागी पं. हजारी लाल शर्मा के सम्बन्ध में बहुत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। दिनकर जी ने लिखा था:-

अलिखित ही रही सदा जीवन की लिखित कथा,
जीवन की लिखित कथा सत्य नहीं क्षेपक है।।

इन पंक्तियों के निहितार्थ को समझने की कोशिश करें, तो सहज ही यह निष्कर्ष सामने आता है कि हजारी बाबू जैसे बहुरंगी व्यक्तित्व पर कम से कम एक-दो प्रामाणिक जीवनियाँ तो प्रकाशित होनी ही चाहिए थीं। पर जीवनी किसी भी व्यक्ति की हो, उस व्यक्ति के सहयोग के बिना नहीं लिखी जा सकती, जिस पर जीवनी लिखी जानी है।

जब तक जीवनी का नायक अपने मन को जीवनी लेखक के सामने न उड़ेले, कोई भी पठनीय और प्रेरक जीवनी नहीं लिखी जा सकती। हजारी बाबू इतने अल्मस्त थे कि उन्होंने कभी अपने जीवनी-लेखन की कोई कामना ही नहीं की। यदि ऐसी कोई भी ऐषणा उनके मन में होती, तो वे अपनी आत्मकथा लिखने में भी समर्थ थे। किन्तु महंगी कारों में बैठने की हैसियत वाले हजारी बाबू को जयपुर की सड़कों पर रिक्शा में चलना पसंद था, तो इससे उनकी सादगी और इनके बड़प्पन का अनुमान लगाया जा सकता है।

हजारी बाबू नैतिक मूल्यों के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने कभी किसी राजनेता की चाटुकारिता नहीं की। कहीं पर गलत तरीके से जमीन नहीं हथियाई और न सरकार से कभी अनुचित लाभ उठाने की कोशिश ही की। उनके उदात्त जीवन मूल्यों का इससे बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है कि वे दिनेश खरे को उनकी ख्याति सुन कर बनारस से जयपुर लाए। लेकिन खरे ने जब अपने पद का दुरुपयोग करना प्रारंभ किया तो उन्होंने खरे की सेवाएं भी समाप्त करने में हिचक नहीं दिखाई। लेबरकोर्ट में वर्षों तक मुकदमा चला, पर हजारी बाबू को भले ही भारी धन राशि मुआवजे के रुप में देनी पड़ी, लेकिन उन्होंने खरे को सम्पादक के रुप में पुनः स्वीकार नहीं किया। ऐसे ही कुछ और लोग भी थे, जिनकी दायित्वहीनता को हजारी बाबू नहीं सह सके।

मेरी दृष्टि से राजस्थान के पत्रकार जगत में पिछली आधी सदी में कोई पत्र स्वामी ऐसा नहीं हुआ, जो उन जैसा साहित्यानुरागी रहा हो। हिन्दी के बड़े से बड़े लेखक और कवि उनके निजी मित्रों में थे। ‘गेहूं और गुलाब’ के प्रसिद्ध लेखक रामरक्ष बेनीपुरी, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर और सुप्रसिद्ध व्याकरणाचार्य किशोरी दास वाजपेयी उनके अन्तरंग मित्रों में थे।

कहते हैं कि राहगीर को अगला गांव पहुंचने पर पिछला गांव याद आता है। इस उक्ति को ध्यान में रखें तो आज के हालात में पत्रकारिता में जिस तरह की विकृतियां आई हैं, जिस प्रकार भूखण्डों की लूट और पेड न्यूज जैसी अनैतिक कारगुजारियां चल रही हैं, हजारी बाबू के उच्च पत्रकारी मूल्यों को हमें नमन करना ही होगा।

वाजपेयी जी की कन्याओं का तो विवाह तक का सारा व्यय भार हजारी बाबू ने वहन किया था। इतना ही नहीं, वे बेचन शर्मा उग्र जैसे अक्खड़ और बदजुबान, किन्तु अपनी लेखन शैली के लिए अद्वितीय माने जाने वाले लेखक द्वारा उनके प्रति शिष्टाचार विहीन भाषा का यदा-कदा प्रयोग किए जाने के बावजूद हजारी बाबू उनको भी आर्थिक सहायता देते रहे। उग्र जी लम्बे अरसे तक जयपुर में राम रतन कोचर द्वारा संचालित ‘साप्ताहिक गणराज्य’ से भी जुड़े रहे और इस दौर में उन्होंने एक बार हजारी बाबू के प्रति ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो शिष्टाचार की सीमाओं का बेहद अतिक्रमण करने वाली थी। पर हजारी बाबू तनिक भी नाराज नहीं हुए और उग्र जी के साथ उनके निजी संबंधों में कोई अन्तर नहीं आया। मेरी और हजारी बाबू की आयु में बड़ा अन्तर था, किन्तु वे मेरे गीतों को और मेरे काव्य पाठ को बहुत पसंद करते थे और मेरे प्रति एक प्रकार का वत्सल्य भाव रखते थे।

राज नेताओं में भी शायद ही कोई राष्ट्रीय और राज्य स्तर का नेता रहा हो, जिनसे हजारी बाबू के व्यक्तिगत संबंध नहीं रहे हों। जब राष्ट्रदूत का लोकार्पण हुआ तो स्वयं जगजीवन राम जयपुर पधारे थे। बिहार के और बंगाल के अनेक वरिष्ठ नेता उनके मैत्री बंधन से बंधे थे। हजारी बाबू को अच्छी बंगाली भी आती थी। जयपुर आने से पूर्व कलकत्ता में उनका बड़ा प्रकाशन गृह और जनवाणी नाम का एक विशाल मुद्रणालय था, जिसमें सब भारतीय भाषाओं के मुद्रण की व्यवस्था थी। उन्होंने रानी नाम से एक साहित्यक पत्रिका भी निकाली थी।

हजारी बाबू ने राजनीति में भी प्रवेश किया और वे विधानसभा के सदस्य भी चुने गए। किन्तु उन्होंने अपने राजनैतिक प्रभाव का कोई लाभ अपने पत्र के लिए नहीं लिया। राष्ट्रदूत के संपादकीय विभाग में जितने भी लोग काम करते थे, उनके प्रति उनका सहज वत्सल भाव था। पत्रकारिता के उदात्त जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए हजारी बाबू निरंतर प्रयत्नशील रहे। आज के हालात तो ये हैं कि पत्र स्वामी अपने समाचार पत्रों के सहारे न जाने और कितने व्यवसाय चलाते हैं और ऐसे उदाहरण भी कम नहीं हैं, जब समाचार पत्रों के मालिक अचार, मुरब्बे और सौंदर्य प्रसाधनों से जुड़े कारखाने भी चलाते हैं।

हजारी बाबू की कथनी और करनी में कभी कोई अन्तर नहीं रहा। वे छल-छद्‌म से दूर एक सत्यानवेषी पत्रकार थे। यही कारण है कि हजारी बाबू ने राष्ट्रदूत की जो साख और प्रतिष्ठा उस कालखण्ड में अर्जित की थी, वह आज भी न्यूनाधिक रुप में कायम है। पत्र की प्रसार संख्या सीमित होते हुए भी उसका प्रकाशन आज आठ स्थानों से हो रहा है। राष्ट्रदूत का दिल्ली ब्यूरो तो आपने आप में इतना विशिष्ठ है कि उसके द्वारा भेजी गई समाचार कथाएं अक्सर चर्चित रहती हैं।

कहते हैं कि राहगीर को अगला गांव पहुंचने पर पिछला गांव याद आता है। इस उक्ति को ध्यान में रखें तो आज के हालात में पत्रकारिता में जिस तरह की विकृतियां आई हैं, जिस प्रकार भूखण्डों की लूट और पेड न्यूज जैसी अनैतिक कारगुजारियां चल रही हैं, हजारी बाबू के उच्च पत्रकारी मूल्यों को हमें नमन करना ही होगा।

■ डॉ. मनोहर प्रभाकर
पूर्व जनसंपर्क निदेशक, राजस्थान

पं. हजारी लाल शर्मा गुण ग्राहक थे

राष्ट्रदूत का नाम लेते ही इस दैनिक समाचार पत्र के संस्थापक एवं संपादक स्व. हजारी लालजी शर्मा की स्मृति ताजा हो जाती है। वह एक मस्तमौला और खुश मिजाज व्यक्ति थे। समाचार पत्र के कुशल संचालन के अतिरिक्त वह साहित्य अनुरागी भी उच्च कोटि के थे।

भरतपुर में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा के अध्ययन लिये मैं जयपुर आ गया था। यद्यपि मैं कॉमर्स का विद्यार्थी था किंतु प्रारंभ से ही मेरी साहित्य व सांस्कृतिक कार्यों में भी पर्याप्त रूचि रही है। सन् 1951 में स्थापित राष्ट्रदूत के हल्दियों के रास्ते में स्थित कार्यालय में साहित्यिक गोष्ठियां होती रहती थीं। इन गोष्ठियों में मैं जाया करता था और इनके आयोजन में एक विद्यार्थी के रूप में जो भी सहयोग होता उसके लिये तत्पर रहता था।

इन गोष्ठियों में मूर्धन्य साहित्यकार राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, पांडेय बेचन शर्मा ‘उग्र’, रामवृक्ष बेनीपुरी सहित अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार जयपुर आते तो उनके सम्मान में साहित्यिक एवं काव्य गोष्ठियां होती रहती थीं। इससे स्थानीय साहित्यकार व साहित्य प्रेमियों के अतिरिक्त यहां की नवोदित प्रतिभाओं को भी अपरिमित लाभ प्राप्त होता था। राष्ट्रदूत दैनिक व वार्षिक विशेषांकों में भी साहित्यिक, ऐतिहासिक व अन्य ज्ञानवर्धक एवं रोचक सामग्री प्रकाशित होती थी। उस समय जयपुर से प्रकाशित राष्ट्रदूत और लोकवाणी ही दो मुख्य दैनिक समाचार पत्र थे। जहां तक मेरी जानकारी है राष्ट्रदूत के समाचार अधिक विश्वसनीय और निष्पक्ष होते थे।

डॉ. पी.एल. चतुर्वेदी

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. पी. एल. चतुर्वेदी की गंभीर शिक्षाविद के रूप में पहचान थी। राज्य शिक्षा सेवा में 38 वर्ष के कार्यकाल में वे व्याख्याता, विभागध्यक्ष, प्राचार्य और कॉलेज शिक्षा के संयुक्त निदेशक के पद पर रहे। वे मध्यप्रदेश के प्रोफेशनल कॉलेज रेगुलेटरी अथॉरिटी के अध्यक्ष भी रहे। वे जीवन पर्यन्त देश की अनेक शैक्षणिक, साहित्यिक व समाज सेवी संस्थाओं से जुडे रहे।

पं. हजारी लाल शर्मा गुण ग्राहक थे। उनकी संपादकीय व संवाददाताओं की टोली में समर्पित भाव से कार्य करने वाले पत्रकार थे। इनमें से बहुत से लोागें ने कालांतर में पत्रकारिता के क्षेत्र मे नये कीर्तिमान स्थापित किये। इनमें कर्पूर चंद कुलिश, सुमनेश जोशी, जुगल किशोर चतुर्वेदी, चंद्रगुप्त वार्ष्णेय, दिनेश खरे, शिवपूजन त्रिपाठी, शिवचरण, कालीचरण, श्री गोपाल पुरोहित, भागमल जैन, कमल किशोर जैन, कैलाश मिश्र, ईश्वरमल बाफना, तारा प्रकाश जोशी, वेदव्यास, वीर सक्सेना, लप्सा वेड़वाल और मोहन लाल गुप्त आदि हैं।

पं. हजारी लालजी के नेतृत्व में यह लोग टीम भावना से कार्य करते थे। इसका ज्वलन्त प्रमाण यह भी है कि जब 1 अगस्त 1951 को केन्द्रीय श्रम मंत्री बाबू जगजीवन राम ने राष्ट्रदूत का शुभारंभ किया तब उनके सम्मान में दिये गये एट होम का निमंत्रण पत्र श्री हजारी लाल शर्मा प्रबंध संपादक तथा राष्ट्रदूत के संपादकीय विभाग के सदस्यों की ओर से जारी किया गया था।

पं. हजारी लाल शर्मा की मुख्यमंत्री जय नारायण व्यास से घनिष्ठता थी किंतु शासन के खिलाफ कोई बात होती तो वह राष्ट्रदूत में अवश्य प्रकाशित होती थी। सन् 1954 में मोहन लाल सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री बन गये। किंतु हजारी लालजी ने सरकार से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। इससे राष्ट्रदूत को आर्थिक हानि हुई किंतु हजारी लालजी अपनी निष्पक्षता की राह पर अडिग रहे और जनहित के समाचार प्रकाशित करते रहे तथा सरकार की गलत नीतियों व अहितकारी तथा भ्रष्टाचार आदि के समाचार प्रकाशित करने व अलोचना करने में पीछे नहीं रहे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि पं. हजारी लालजी के सुपुत्र व राष्ट्रदूत परिवार के लोग समाचार पत्रों को भली प्रकार से प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें अनेक समाचार एक्सक्लूजिव होते हैं। बीच के अंग्रेजी के पृष्ठों में भी रोचक ज्ञानवर्धक सामग्री प्रकाशित की जा रही है।

■ डॉ. पी.एल. चतुर्वेदी

रिक्शा चालक भी उनके साथ सहज अपनत्व अनुभव करता था

> **“मानवीयता की सौंधी सुगन्ध उनके वार्तालाप, व्यवहार, खुलेपन और ठहाकों से बरसती प्रतीत होती थी। ये गुण उन्हें सामान्य जन से जोड़ने का काम करते थे। गाहे-बगाहे उन्हें रिक्शा पर बैठा देखा जा सकता था। मय ड्राइवर कार थी, फिर भी अधिकतर उन्हें रिक्शा पर सवारी करते देखा जा सकता था।”**

किसी परिचित को उदास या परेशान देखा। कारण पूछा। अर्थाभाव की जानकारी मिली। जेब में हाथ डाला। बीस, तीस, पचास, सौ, जितना ठीक लगा दे दिया। संयोगवश अपनी जेब में राशि नहीं है तो सामने पड़ने वाले दुकानदार से कहेंगे, इसे इतने रूपये दे दो। बाद में उतनी राशि दुकानदार के पास पहुंच जाती। उनकी साख व हैसियत इतनी मजबूत थी कि कोई भी दुकानदार उनके निर्देश का पालन करने में रंच मात्र भी नहीं हिचकिचाता। ये थे पं. हजारीलाल जी शर्मा। बेहद उदार, बेहद सरल, बेहद सहज हृदय। दुःख भंजक स्वभाव जिनके रोम-रोम में समाया था। सत्तासीन शीर्षस्थ नेताओं से आदरपूर्ण संबंधों के कारण वे चाहते तो प्रमुख स्थानों पर कौड़ियों के भाव सम्पत्ति हथिया सकते थे। ऐसे उदाहरण व दृश्य लगभग प्रत्येक बड़े अखबार के सन्दर्भ में यत्र तत्र देखे जा सकते हैं। बड़ी-बड़ी जमीनें, ठेके, कारखाने, सत्ता पर दबाव बनाकर वैध-अवैध काम, जायज, नाजायज विपुल राशियों के विज्ञापन, राजनीतिक दलों व चुनाव लड़ने वालों के प्रचार के लिए अनैतिक अनुबंध चाहते तो पं. हजारीलालजी शर्मा भी कर सकते थे। यह सब करना उसके लिए इसलिए भी आसान होता क्योंकि वे स्वयं सक्रिय राजनीति में थे। कोटपूतली से सत्तासीन कांग्रेस के विधायक थे। राजस्थान सरकार के मंत्री व मुख्यमंत्री उनका भरपूर आदर करते थे। बरकत उल्ला खान और चन्दनमल वैद जैसे नेता उनके घनिष्ठ मित्र थे। बाबू जगजीवन राम जैसे राजनेता जब जयपुर आते थे तो उनसे मुलाकात या उनके साथ भोजन किए बिना वापस नहीं लौटते थे। सुप्रसिद्ध, कवि लेखक व राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रामधारी सिंह दिनकर जयपुर आते थे तो पं. हजारीलालजी की ओर से आयोजित साहित्यिक गोष्ठी में शिरकत किए बिना शहर नहीं छोड़ते थे। ऊपर से वे राष्ट्रदूत जैसे प्रदेश के सर्वाधिक लोकप्रिय समाचार पत्र के स्वामी थे। लाभ अर्जित करने के लिए उन्हें भाग दौड़ करने की जरूरत नहीं थी। संकेत मात्र से जो चाहते, मिल जाता, किन्तु उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया।

मानवीयता की सौंधी सुगन्ध उनके वार्तालाप, व्यवहार, खुलेपन और ठहाकों से बरसती प्रतीत होती थी। ये गुण उन्हें सामान्य जन से जोड़ने का काम करते थे। गाहे-बगाहे उन्हें रिक्शा पर बैठा देखा जा सकता था। मय ड्राइवर कार थी, फिर भी अधिकतर उन्हें रिक्शा पर सवारी करते देखा जा सकता था। साईकिल रिक्शा का चालक भी पं. हजारीलालजी के साथ अत्यन्त सहज अपनत्व अनुभव करता था। वे जौहरी बाजार में गोपाल जी के रास्ते के कोने पर स्थित, तब प्रसिद्ध शर्मा रेस्टोरेन्ट में घंटों बैठे रहते थे। पान के अनेक बंधे बीड़े उनके पास रहते थे। चाय और पान का प्रसाद बांटते हुए वे प्रत्येक व्यक्ति के दुख-सुख बांटते रहते थे। समस्याएं सुलझाते रहते थे। आत्मीय स्पर्श देते रहते थे। नीचे राष्ट्रदूत का कार्यालय व प्रेस थे। ऊपर पं. हजारीलाल जी का परिवार निवास करता था। वे रात को दस-साढ़े दस-ग्यारह बजे जब भी लौटते, सबसे पहले कार्यालय में जाते और पूछते ‘क्या खबर है?’ रेडियो के लिए झलकियां व नाटक लिखने वाले यशस्वी व नामचीन लेखक जयसिंह एस. राठौड़ प्रायः रात की ड्यूटी कर रहे होते थे और टेलीप्रिन्टर के पास बैठते थे। सामान्यतः वही जवाब देते थे। उस दिन के प्रमुख समाचार सुनकर वे तब रिर्पोटिंग का काम देख रहे मोहन लाल गुप्ता को उस दिन के कुछ नए समाचार बिन्दु देते। इसके बाद ऊपर जाकर मिनटों में खाना खाकर नीचे आ जाते थे। वे एक रोटी को मात्र तीन ग्रासों में तेजी से चबाते हुए भोजन करते थे। कभी मशीनों की आवाज रूक जाती तो रात के कितने भी क्यों न बजे हों, तुरन्त नीचे आकर कारण पूछते। राष्ट्रदूत के प्रति समर्पण भाव उनके प्रत्येक कार्यकलाप में इस तरह रचा-बचा-गुंथा था कि बहुमुखी प्रतिभाओं के बावजूद उनके साथ पहला विशेषण ‘राष्ट्रदूत वाले पं. हजारीलालजी शर्मा’ के रूप में चस्पा होता था।

पहली अगस्त को राष्ट्रदूत का स्थापना दिवस आता है। यह दिन पं. हजारीलालजी के विपुल संबंधों के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित होता था। इस अवसर पर उनकी ओर से गोठ का आयोजन होता था। परिवारों सहित राष्ट्रदूत का समस्त स्टाफ, राष्ट्रदूत के हितैषी व उनके सम्पर्क में रहने वाले प्रमुख लोग, राजनेता, आदि गोठ में शामिल होते थे। इस प्रकार के आयोजन आज भी अनेक अखबार अपने-अपने ढंग से करते हैं, मगर उनमें आत्मीयता, बन्धुत्व व सौजन्य भाव नहीं होता, व्यापारिक दृष्टि होती है। पं. हजारीलाल जी की ओर से दी जाने वाली गोठों को स्नेहभाव से देखा जाता था। राष्ट्रदूत में कार्यरत स्टाफ सदस्यों का दुख-सुख उन्हें अपना लगता था। उनके चेहरे पर उदासी देखकर वे उसे मुस्कुराहट में बदलने की चेष्टा में जुट जाते थे। पत्नी बीमार है। उसका ऑपरेशन जरूरी है। पं. हजारीलाल जी स्वयं उसे डॉ. जी.सी. शर्मा के पास ले जायेंगे। डॉ. पैट्रीशिया विकर्स महिला का ऑपरेशन करेंगी। डॉ. जी.सी. शर्मा ऑपरेशन थियेटर में उपस्थित रहकर प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखेंगे। है कोई अखबार मालिक जो अपने स्टाफ सदस्यों के कष्टों को पहचानता ही न हो, उन्हें दूर करने की दृष्टि से हर सम्भव सहायता भी करता हो। गुण ग्राह्यता उनके बड़प्पन का अविस्मरणीय हिस्सा थी। एक बड़े अखबार के स्वामी के कान भरने वाले, उसकी चापलूसी करने वाले और उसे दुनिया का श्रेष्ठतम व्यक्ति सिद्ध करने वालों की कमी नहीं होती है। पं. हजारीलाल जी कभी इन कुचक्रों के शिकार नहीं हुए। सहजता, सरलता, मानवीयता और हैसियत का सामान्यजन के पक्ष में संवेदनशीलता-पूर्ण इस्तेमाल करने वाले पं. हजारीलाल जी शर्मा अपनी विशिष्टताओं के कारण आज भी अनेक लोगों की स्मृतियों में ताजा फूलों की तरह महकते हैं।

■ कोमल
जानी मानी स्वतंत्र लेखिका